दलाल

राम स्वरूप किसान

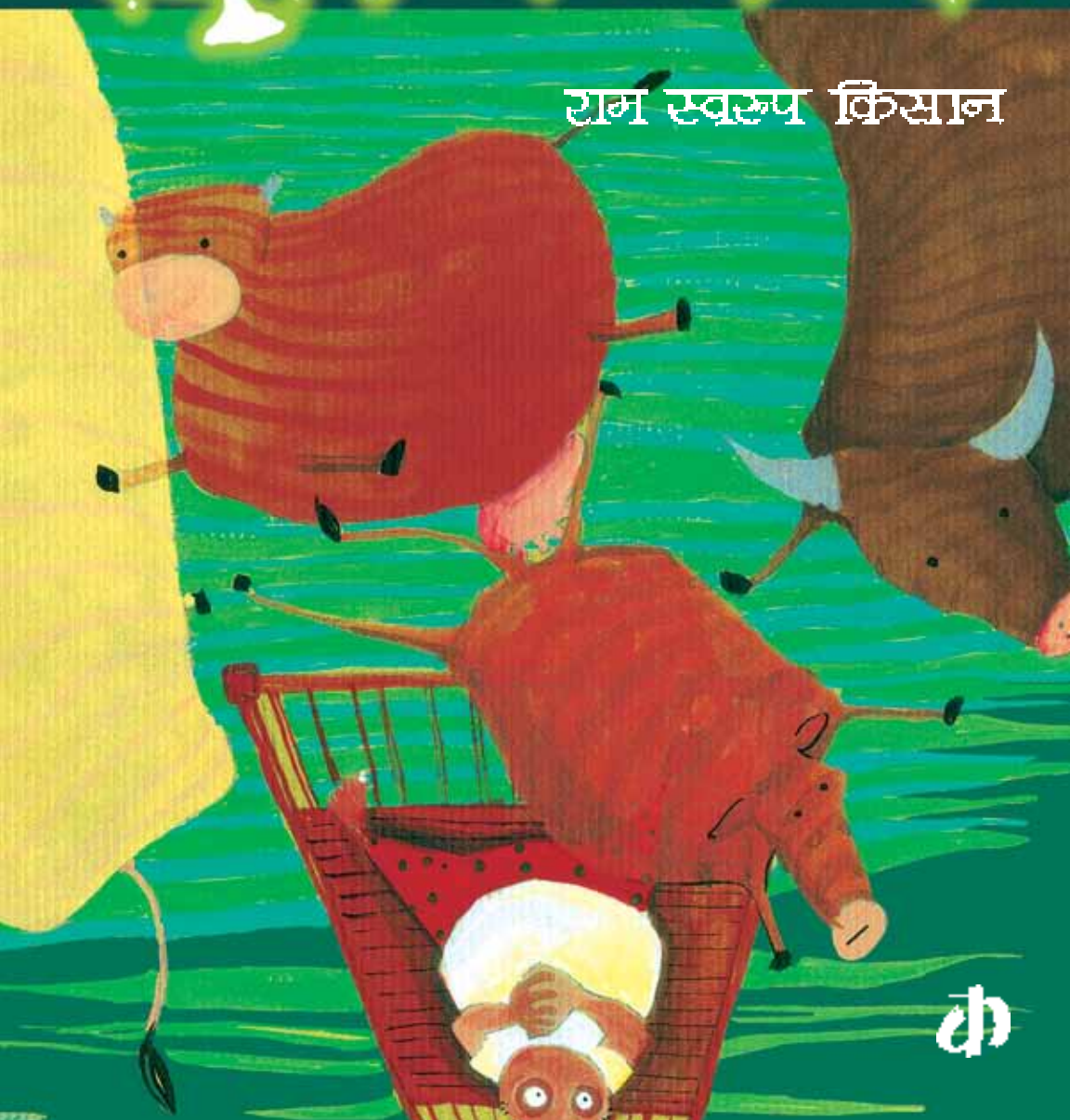

लेखक के बारे में

राम स्वरूप किसान राजस्थानी और हिन्दी में लिखते हैं। आकाशवाण ी और दूरदर्शन पर उनकी कई कृतियाँ प्रसारित की गईं हैं। “गांव की गली-गली” और “बापू एण्ड अदर स्टोरीज़” क्रमशः उनकी कविताओं और कहानियों के संग्रहों के नाम हैं। उन्हें १९९७ में चौधरी रणबीर सिंह मेमोरियल सम्मान से सम्मानित किया गया था।

देवनारा

राम स्वरूप किसान

की राजस्थानी कहानी पर आधारित
कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-17-0
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

मैं हूँ एक जाना-माना दलाल। मवेशियों की ख़रीद-फरोख़्त में मेरा कोई सानी नहीं। सिर पर झूठ-फ़रेब का टोकरा, और ज़ुबान पर शहद रख मैं मवेशियों के व्यापारियों को उनके सौदों में मदद करता हूँ। इसीलिए इस इलाके के लोगों के मन में मेरे लिए काफ़ी इज्ज़त है।

मवेशीः खेतीहर जानवर जैसे गाय, भैंस आदि
ख़रीद-फरोख़्तः ख़रीदना-बेचना
फ़रेबः धोखाधड़ी
सानीः बराबर

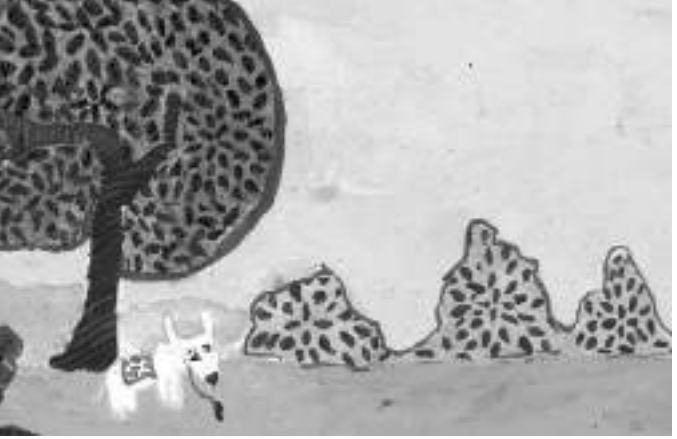

जैसे ही लोग मुझे देखते हैं, वे मुझे चाय की दुकान पर ले जाते हैं और आवाज़ लगाते हैं, “ढाबेवाले, ज़रा दो चाय तो बनाना!”

मुझे देखते ही चाय की दुकान का मालिक उत्सुकता से पूछता है, “और तनसुख, आजकल क्या

चल रहा है?” वह यह दिखाना चाहता है कि वह मुझे अच्छी तरह जानता है।

यह बात अलग है कि कई बार मुझे उसकी शक्ल तक याद नहीं होती।

मैं एक पशु मेले से दूसरे पशु मेले घूमता हूँ। जानवरों का दलाल और करता भी क्या है? पूरे वर्ष कहीं न कहीं मवेशियों के मेले लगते रहते हैं, और वही मेरी आमदनी का ज़रिया भी हैं।

मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ कि मैं ढेरों झूठ बोलता हूँ।

ये झूठ मेरे होंठों पर सजते भी हैं। मैं चाहूँ तो सबसे बेकार, निरे ठूंठ जानवर दिन-दहाड़े बिकवा सकता हूँ।

और चाहूँ तो हीरे जैसा नौलखा जानवर सारे दिन बिना बिके खूंटे से बंधा रहे। चुटकी बजाते ही मोती को पत्थर या पत्थर को मोती बना सकता हूँ।

निराः एकदम, कोरा, जिसमें केवल एक ही विशेषता हो
ठूँठः थन सूखा हुआ
ज़रियाः साधन

२

ऐसी कला है मुझमें कि ख़रीदनेवाले को सामने पड़ा लोहा भी सोना लगने लगे।

ऐसा नहीं है कि मैं सिर्फ़ ख़रीददार को बेवकूफ़ बनाता हूँ। मैं बेचनेवाले की आँखों में भी धूल झोंक देता हूँ। ऐसा जादू करता हूँ कि जानवर खूंटे से तिल-भर भी नहीं हिल पाता।

कुछ मालिक तो पूरे मेले में बस बैठे ही रहते हैं, आँखें मलते और लम्बी-लम्बी जम्हाइयाँ लेते हुए। उनके ग्राहक तो मैं यूँ ग़ायब करवा देता हूँ जैसे ईद का चाँद! मेरी बातों में आकर भली-चंगी मोटी-ताज़ी बछड़ी को भी उसका मालिक शक की निगाह से देखने लगता है।

पलक झपकते ही उसके मुँह से निकलता है, “तुम यह सब कैसे जान लेते हो तनसुख? इस ग़रीब की कोई क़ीमत मिलेगी भी, या नहीं? ठीक है, तुम कहते हो तो मैं क़ीमत घटा देता हूँ।”

मेरे कहने का मतलब है कि मैं लोगों को अपनी छोटी उँगली पर नचा लेता हूँ।

यह कला है मुझमें। आख़िर हूँ तो मैं तनसुख दलाल!

लेकिन मैं यह बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरा पेशा अच्छा नहीं है। सारे दिन भोले-भाले लोगों को ठगना।

मुझे यह भी एहसास है कि झूठ सबसे जघन्य अपराध होता है।

पर मुझे तो पेट भरने के लिए झूठ का सहारा लेना ही पड़ता है। रोज़ी-रोटी चलाने का मेरे पास और कोई साधन जो नहीं है।

जघन्यः बहुत बुरा

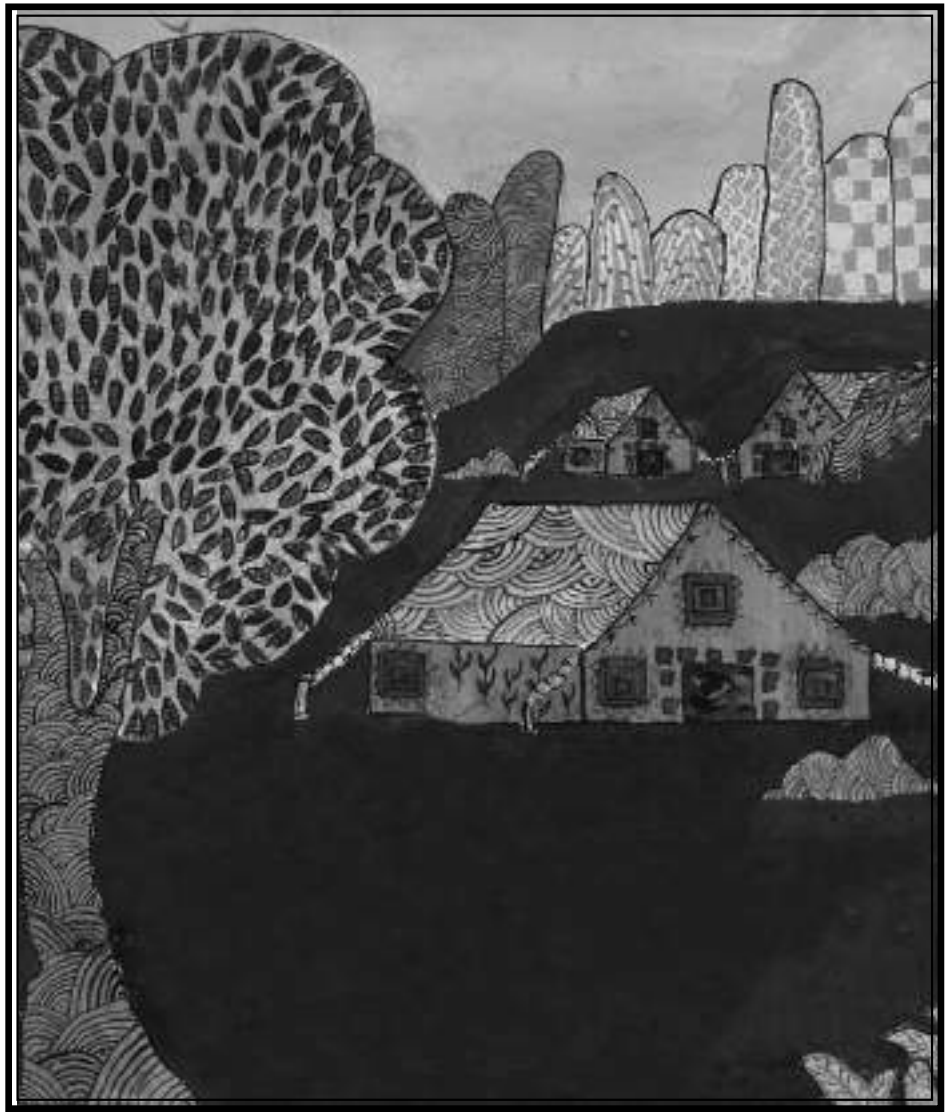

3

मेरे पास कोई ज़मीन जायदाद भी नहीं। तो फिर मैं और करूँ भी तो क्या? मुझे तो सिर्फ़ एक ही काम आता है – दलाली।

मैं यह भी जानता हूँ कि "दलाल" शब्द सुनते ही मन में एक घृणा-सी उभरती है। एक दलाल की समाज में कोई इज्ज़त नहीं है। पर मैं मजबूर हूँ।

थोड़ी देर पहले मैं अपनी चालाकी की डींगें नहीं मार रहा था! आपको सिर्फ़ यह बता रहा था कि मैं इस ज़ालिम पेशे में कितना माहिर हूँ।

दहलीज़: चौखट
माहिर: निपुण, कुशल

गर्मी की एक शाम की बात है। मैं अभी लौटकर ही आया था और अपने घर की दहलीज़ के पास चारपाई पर लेटा था।

सिर पर चिड़ियाँ शोर मचा रही थीं, इसीलिए मैं सो नहीं पा रहा था।

मैंने देखा कि छत का पलस्तर घिस चुका है। ऐसा लग रहा था जैसे कि उसकी छिलके जैसी परतें फटकर मेरे सिर पर आ गिरने को बेचैन हो रही हों।

छत का गलता हुआ छप्पर आनेवाले बुढ़ापे की याद दिला

रहा था। पूरे छत में परिन्दों के बनाए मोखले मेरे जीवन के ख़ालीपन की कहानी कह रहे थे।

मुझे वो सभी क्षण याद आने लगे जब मैंने झूठ बोले और पाप किए।

मोखलेः छेद
पलस्तरः सीमेंट, बालू आदि का मोटा लेप

कितनी ही बार मेहनत की कमाई के बदले बीमार मवेशी बिकवा दिए, और कितनी ही बार तंदुरुस्त मवेशी बिकवाए, कौड़ियों के दाम। कितने-कितने अपराध किए मैंने इस पापी पेट की ख़ातिर, जो इतना सब करने के बाद भी ख़ाली का ख़ाली ही रहा।

मैं अभी गुज़रे वक्त के बारे में सोच ही रहा था कि अचानक कोई सामने आकर खड़ा हो गया और मैं एक झटके से वर्तमान में लौट आया।

"राम-राम, सा!"

कौड़ियों के दामः बिल्कुल सस्ते

"राम-राम, भाई!" मैंने कहा।

"तुम तनसुख हो, न?"

"हाँ।"

"मुझे भैंस ख़रीदनी है," वह बोला, और चारपाई के पैताने मेरे पास आकर बैठ गया।

वह बूढ़ा था – लगभग साठ वर्ष का। जीवन के भार से बोझल उसका चेहरा उसकी यह कहानी कह रहा था।

तुरंत ही मुझे ख़याल आया कि अपने पाप धोने का यही सबसे अच्छा मौका है।

पैताने: चारपाई के पैर की तरफ

मैं इस ज़रूरतमंद और परेशान इंसान के लिए एक अच्छी भैंस ख़रीदवा सकता हूँ।

उसने एक घूँट पानी पिया, फिर कहा, “तुमने सुना मैंने क्या कहा?”

“हाँ सुना। क्या तुम्हारी नज़र में कोई भैंस है?” मैंने पूछा।

“हाँ है। अगर तुम सिर्फ़ सौदा करवा दो ...।”

“कहाँ है?”

“दरअसल, वह यहाँ पास ही है। काशी रैगर की भैंस है, जो तुम्हारे पड़ोस में ही रहता है।”

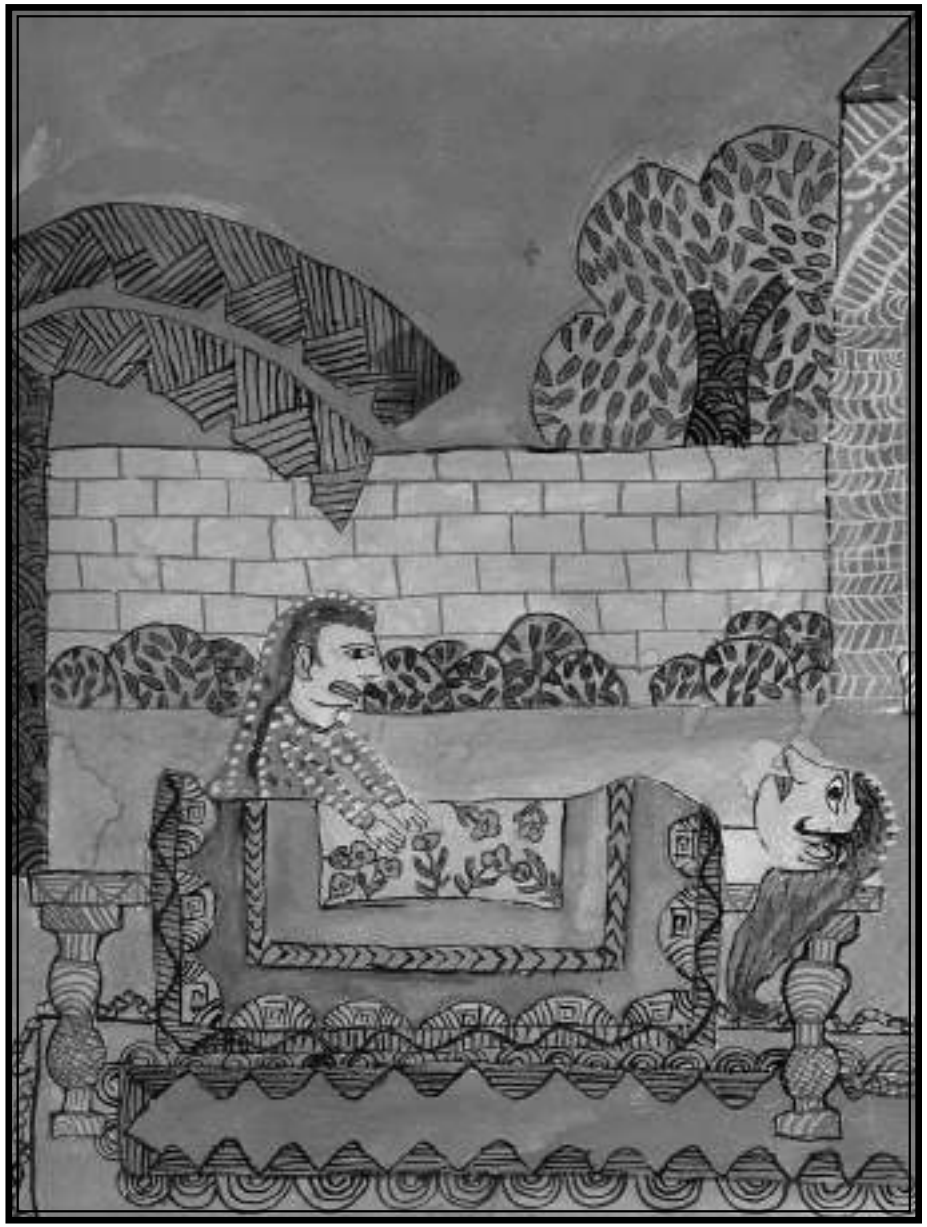

४

काशी का नाम सुनते ही एक भोला-भाला चेहरा और ग़रीबी से खोखला हुआ घर मेरी आँखों के सामने तैरने लगा। साथ ही, मेरी आँखों के सामने आ गई उसकी कैंसर से मर रही पत्नी और छोटे-छोटे मासूम बच्चे।

काशी को अपनी पत्नी के इलाज के लिए पैसे जुटाने थे, और इसीलिए वह अपनी भैंस बेचना चाहता था।

उसने कई बार मुझे कहा भी था, “तनसुख, मेरी भैंस बिकवा दो! मेरी बीवी का इलाज सिर्फ़ इस पर निर्भर करता है।

“डॉक्टरों ने ऑपरेशन बताया है और मेरे पास एक पैसा तक नहीं। तुम तो दलाल हो। मेरे लिए यह छोटा-सा काम कर दो। चाहो तो दलाली भी ले लो, दोस्त!”

यह भी इतना बुरा नहीं था। लेकिन इस नाम से मेरे मन में एक और तस्वीर उभर आई – काशी की बीमार भैंस की। उसके चार बार बच्चा गिर चुका था।

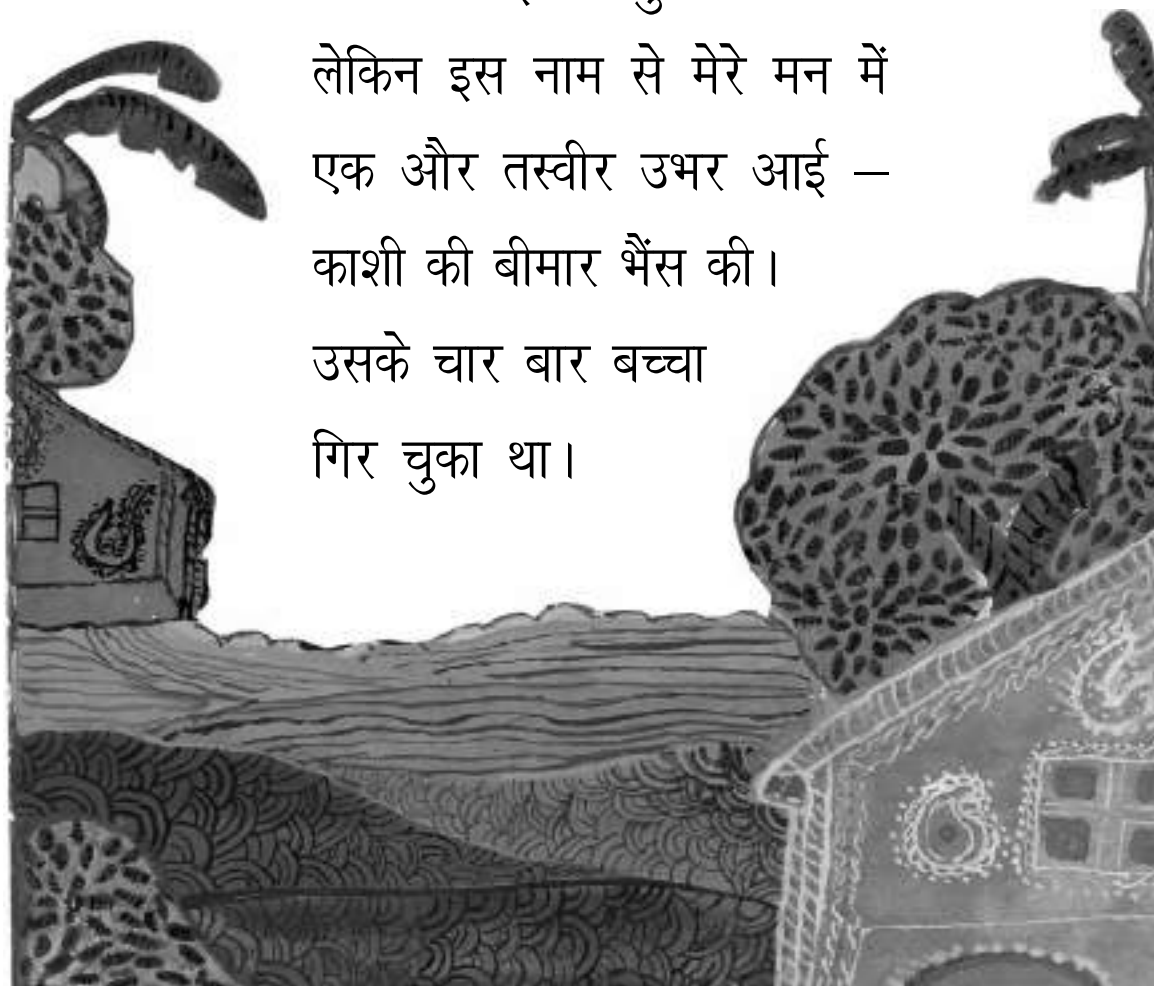

जानवरों के डॉक्टर ने उसका इलाज किया था। उसने सावधान भी किया था कि एक बार और बच्चा गिरा, तो भैंस ज़रूर मर जाएगी।

मैं भारी कठिनाई में पड़ गया। मेरे मुँह से एक शब्द भी न निकला। बस मन ही मन उधेड़बुन में लग गया।

काफ़ी देर बाद बूढ़े ने चुप्पी तोड़ी, "क्या फ़ैसला है तुम्हारा? क्या सोच रहे हो? मेरी मदद नहीं करोगे?"

"नहीं, मदद तो करूँगा। तुम काशी की भैंस की बात कर रहे थे न?"

उधेड़बुनः परेशान होकर सोचना

"हाँ, पर तुम इतने परेशान क्यों लग रहे हो? क्या उस भैंस में कोई खोट है? मुझे मुसीबत में मत डाल देना भाई। मैं ठहरा ग़रीब। मुझे तो बस अपने बेटे के लिए एक भैंस चाहिए।"

"बेटे के लिए?"

"हाँ, मेरा बेटा बीमार है। दो साल तो अस्पताल में भर्त्ती रहा। अभी कल ही वहाँ से छुट्टी मिली है।

"डॉक्टर कहता है, उसे दूध पीना चाहिए। तो मैंने सोचा कि एक भैंस ख़रीद लेनी चाहिए। परिवार के लिए कमाई का साधन भी हो जाएगा और बेटे के लिए दूध भी।"

"ओह।"

"हाँ। तनसुख, एक तुम ही हो जो मुझे बरबाद होने से बचा सकते हो। मेरी परेशानियाँ अब और न बढ़ाना भाई!"

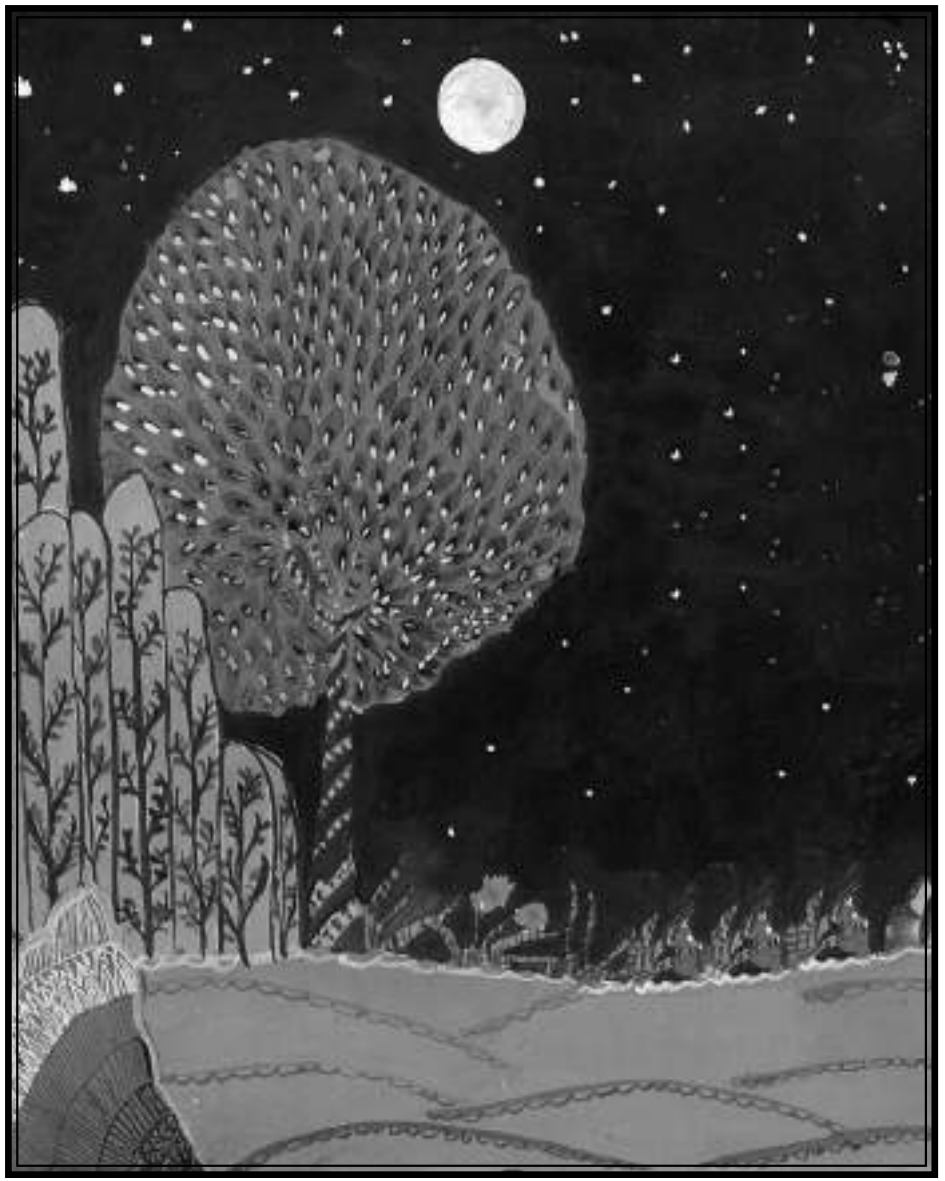

5

मैंने एक लम्बी साँस ली और बुत बना बैठा रहा। आसमान मेरे चारों ओर तेज़ी से घूमता-सा लग रहा था। मेरा दिल दहल उठा।

मेरी बीस वर्ष की दलाली में पहले कभी यूँ न फँसा था। एक ही बार में उस बूढ़े ने मेरे सभी पापों की सज़ा मेरे सामने लाकर रख दी थीं।

मेरे सामने खड़े थे दो इंसान हाथ फैलाए, भूख से मरते, आख़िरी साँसें गिनते हुए दो बीमार शरीर।

किसे बचाऊँ मैं, किसे न बचाऊँ? किसे धोखा दूँ, काशी को, या फिर इस बूढ़े को?

ये सवाल मेरी आत्मा को कचोट रहे थे। बूढ़े आदमी से क्या कहूँ – हाँ या ना? हाँ का अर्थ होगा इस बूढ़े की हत्या, और ना का अर्थ होगा काशी का अंत।

"तनसुख भाई, क्या काशी के घर चलें?" उसने फिर दोहराया।

"मैं कोई दलाल नहीं हूँ, बुड्ढे!" मैं चिल्ला पड़ा, "जो जी में आए करो!"

वह बूढ़ा अपनी लाठी के सहारे धीरे-धीरे खड़ा हुआ, और फिर काँपती टाँगों पर लड़खड़ाता हुआ घर से बाहर चला गया।

कचोटना: कुरेदना, परेशान करना

मैं अपनी चारपाई पर अकेला बैठा रहा।

फिर दोबारा लेट गया और पहले की तरह छत की ओर देखने लगा। हमेशा की तरह, चिड़ियाँ अब भी लड़ रही थीं।

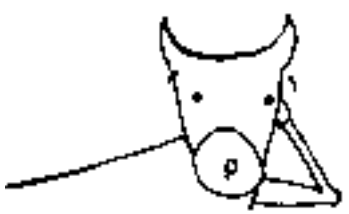

सोचो, समझो, विचार करो और एक अच्छे इंसान के गुण ढूँढ़ो। ढूँढ़े गए शब्दों का एक साथ प्रयोग करके एक कहानी की रचना करो।

bZ	l	es	g	u	rh
ek	e	l	p	e`	cq
u	j	nk	l	mq	f)
nk	l	pk	u	Hkk	ek
jh	g	jh	d	"kh	u

कहानी को किसी भी प्रदेश में स्थित करके लिख सकते हो।

सदाचारी

कहानी लिखते समय उस प्रदेश के रीत-रिवाज़ एवं वहाँ की संस्कृति को दर्शाओ।

वहाँ के पेड़-पौधे तथा जानवरों को भी अपनी कहानी में शामिल करो।

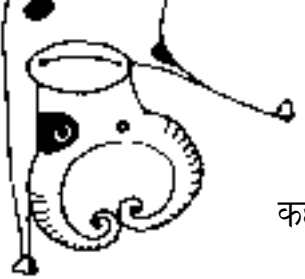

कहानी पढ़कर मन में उठते हैं ढेरों सवाल। पढ़ो, सोचो, और ढूँढो अपने सवालों के जवाब।

मवेशियों का दलाल क्या करता है?

आँखों में धूल झोंकना तनसुख का पेशा कैसे और क्यों बन गया?

तनसुख दलाल ग्राहक को ईद का चाँद कैसे बना देता था?

गाँव और शहर में चल रहे यातायात के साधनों में क्या-क्या अंतर हैं?

अक्सर आदमी जब एक बार लालच में फँस जाता है, तो फँसता ही चला जाता है। क्यों?

मवेशियों के मेले में कौन-कौन से जानवर देखने को मिलते हैं?

अगर तुम तनसुख की जगह होते, तो क्या करते?

दलाल के मन में बार-बार ऐसे प्रश्न क्यों उठ रहे थे, कि किसे बचाऊँ और किसे धोखा दूँ?

क्या कहती है कहानी?

तनसुख करता तो था दलाली, पर मन में कहीं न कहीं उसे अपने किए काम परेशान करते थे। जब उसे एक मौका मिला कुछ अच्छा करने का, तो उसने क्या किया? पढ़ो और जानो।

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

1

तनसुख करता तो था दलाली, पर मन में कहीं न कहीं उसे अपने किये काम परेशान करते थे। जब उसे एक मौका मिला कुछ अच्छा करने का, तो उसने क्या किया? पढ़ो और जानो।